सारा अबूबकर के उपन्यासों में स्त्री शोषण

- प्रो. श्रीमती राजु एस.बागलकोट

शोध सार :-

कन्नड साहित्यकार में सारा अबूबकर ने उन मुस्लिम महिलाओ के दर्द को दूर करने का जिम्मा लिया है, वह उनका अपना चरित्र है, जो कहानीऔर कुछ उपन्यासो का योग है।यहाँ अध्ययन के लिए 'चंद्रगिरि तट पर' (उपन्यास) और 'जुते' (कहानी संकलन) है। इस उपन्यास को चार खंडों में विभाजित किया है। इसमें पितृसत्ता व्यवस्था हम यह संस्कृति और देश, देश और संस्कृति के अनुकूल है। सारा ने इस कहानी के लिए, दक्षिणकन्नड केरल सीमा पर लोगों का सबसे कठिन जीवन को लेकर लिखी कहानी यह एक ऐसा वातावरण है जहाँ गरीबी, डर, अशिक्षा भारी हो सकती है।

बीज शब्द :- सारा अबूबकर, स्त्री शोषण और कन्नड साहित्य

प्रस्तावना :-

सारा अबूबकर कहती है की धर्म मौलवी के अनुसार वहा के मुसलमानों का जीवन जैसा था, वैसा ही है। इस प्रकार उनकी पितृसत्तात्मक व्यवस्था गरीबी और धार्मिक निरक्षरता के अनुरूप है। इस रचना में यह सब उसकी गहरी महिला सवेंदनाओ के बारे में है। यद्यपि पितृसत्ता धर्म और देश के मतभेदों को पाते हैं कि मुसलमान महिलाओ पर उनके प्रतिबंधों के कारण एक अलग रूप मोड लेता हैं। इसमें निहित महिला पात्रों के साथ विषय को तीन व्यवस्था के रुप में देखसकते, धार्मिक व्यवस्था के उत्पिडन के प्रति महिला पात्रों की प्रतिक्रिया की प्रकृति, कठोर महिला पात्र जिन्हें जीवीत रहने के लिए कठोर दबाव दिया जाता है, आत्मसात करनेवाली स्त्री चेतना की एक एक करके व्याक्या की जा सकती है, धर्मनिर्प्रेक्ष व्यवस्था के उत्पिडन के प्रति वादियों की प्रतिक्रिया की प्रकृति जैसा कि पिछले खण्ड में देखा है की, मुस्लिम समाज का जीवन धर्म के नियमो पर इन नियमो पर भारी पड़ता है। घोषणा करने पर प्रतिबंध जो कि एक प्रति का विशेषदिकार है महिला के तलाक के अधिकार को गंभीर रूप से सीमित कर देगा चंदगिरि तट पर उपन्यास से नादिरा, धार्मिक जाल की कहानी से खतीजाबी, मरीयम्मा के दामाद आदि है।

मेहनती महिला पात्र हालांकि कठिन है, लेकिन उन्होंने अपनी जीवन शक्ति नहीं खोई है। पतियों की गरीबी, कठिनाई और गैर जिम्मेदारि इन किरदारों के दिल में मेहमानों के लिए खास खाना बनाने से लेकर जीवन को परिभाषित करने की सोच तक के प्यार को खत्म नहीं करती है। मातृत्व उनका जुनून, परिवार के सदस्यों की भलाई बच्चों की समृद्धि भी खिलाने के लिए पर्याप्त है। इस में चेतना प्रकृति से जुड़ी हुई है, क्योंकि इसका प्रकृति के साथ आत्मसाथ होनेवाली स्त्री चितसत्ता के साथ स्वस्थ अंत: क्रिया नहीं है। चंदगिरि के तट पर नदी भी स्त्री पात्र बन जाती है। और नादिरा के दुःख से जुड़ी है। सारा की भाषा और वाक्यांश सारा की भाषा सरल और सिधी है। यहाँ हमारी तरह का कोई भाषा टीचर नही है। मुस्लिम संस्कृति के वाक्यांश, व्याक्या, तोम्बि, जन्नत, बिरियानी ये सारे शब्द पाठको को एक अनूठा अनुभव देते हैं।

सारा अबूबकर महिला साहित्य की विशेषज्ञ हैं । इससे पहले किसी भी मुस्लिम महिला ने कन्नड में साहित्य नहीं लिखा था । यद्यापि काम कन्नड में पुरूष मुस्लिम लेखकों द्वारा लिखा गया था, उनकी सामग्री बहुसंख्यको से बहुत अलग नहीं थी । ७वी शताब्दि में जब सारा अबूबकर के चंदगिरि तट द्वारा लंकेश पत्रिका में प्रसारित उपन्यास को पाठक वर्ग को एक नया अनुभव मिला। ऐसा पहली बार हुआ है कि किसी मुस्लिम महिला को धर्म के नाम पर नुकसान उठाना पड़ा है। उनका अगला काम परिवार में एक मुस्लिम महिला के संघर्ष, कारण और जीवनयापन करने के संघर्ष को उजागर करने का प्रयास करता है। संघर्षविराम उपन्यास के अनुवाद के साथ आट उपन्यास और पांच कहानी संग्रह प्रकाशित किए गए है, और अधिंकाश कहानियाँ मुस्लिम समुदाय, विशेष रूप से परिवार के सबसे गरीब लोगों के जीवन को उजागर करती हैं उनकी रचनाएँ एक ऐसी महिला की दयनीय स्तिथि का खुलासा करती हैं जो आर्थिक पिछ्डेपन, अशिक्षा और सामजिक-धार्मिक दायित्वों के बीच नहीं रहती है।

सारा के कई कार्यो से पता चलता है की यह विचार कि विवाह एक महिला को सुरक्षा प्रदान करता है, एक भ्रम है। गरीब परिवार की लड़कियों को बचे हुए लोगों की कठपुतली में बदल दिया जाता है। अगर पति ने एक बार अपनी पत्नी के लिए थोड़ा प्यार दिखाया, तो वह काफी नहीं है। महिला बिना किसी जानकारी के अपने सामने राक्षसी तलाक के बारे में जल्दी से जगरुख हो जाती है। उपन्यास वजरगलु (हीरे) इस बात को उजागर करता है कि यह तलाक एक महिला के जीवन को कैसे प्रदर्शित करता है। एक पति के लिए जो नफीसा को मना कर देता है क्योंकि वह एक लड़की है जो गांव में पैदा हुई और पली- बढ़ी, उसका शरीरिक संपर्क असंभव नहीं है। उसे उसकी वासना को पूरा करने के लिए उसके साथ सहयोग करना चाहिए, और वह उस अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करने के लिए बर्बर है।

महिला को परिवार, समाज, धर्म, आदि द्वारा सताया जा रहा है। सारा अबूबकर की कृतियों का खुलासा हुआ है। उनके काम पर आनेवाली महिलाएं निम्न वर्ग, मजदूर वर्ग या निम्न मद्यम वर्ग की हैं । महिलाओ का दूसरा समूह काम न करने पर भी परिवार को घर से मुआवजा देने के लिए जिम्मेदार होता है। घर के सदस्यों को अपने पड़ोसियो के साथ घूमना पड़ता है क्योंकि वे शहर से बाहर जाते हैं, कभी- कभी मारने के लिए, सम्पादन के लिए । पति की गैरमौजूदगी में परिवार कि जिम्मेदारि संभाल रही खतीजाबी बेटी को बेचने के लिए बच्चों के साथ एक अमीर आदमी का होना घृणित है। क्या स्त्री और पुरूष दोनों को व्यभिचार का दोषी नहीं होना चाहिए? यहाँ सजा खुद के लिए है। अगर वह इन लोगों की दुर्दशा को उजागर नहीं करता है तो उसका नाम खतीजाबी नहींहै! जब संपत्ति की बात अति है, तो पिता ही एकमात्र पुरुष साथी होता है। महिलाओ को सेवा और सेवा और सेवा करने की जरूरत है।

“मुस्लिम समाज में महिलाएँ कितनी बेबस हैं। पति खुद नदी के किनारे आकर मेरा इंतजार कर रहा है, तो भी पिता की आँख चुराकर जा नहीं सकती।”[i] (सारा अबूबकर, चंद्रगिरी तिरदल्ली, पृ. सं -32) अपनी असहायकता माँ से बतलाते हुए कहती है -माँ, कुछ भी करो, मुझे मेरे पति के पास जाने दो। माँ भी बेबस

है, लाचार है। समाज का डर, धर्म का पालन इन दो पाटों में फिसने वाली माँ भी कुछ नहीं कर पाती। इसी संदिग्धता में नादिरा तडपने लगती है। नादिरा को चिठ्ठी लिखनेके लिए कागज-पेंसिल भी नहीं दी जाती। रशीद की माँ नादिरा के घर पहुँच जाती है। सास मुझे लेजाने आयी हैं, यह समझकर जाने को तैयार होने लगती है। लेकिन सास नादिरा के सिर्फ बच्चे को ले जाती है। नादिरा की आशा टूटकर चूर-चूर हो जाती है। बच्चे के चले जाने से वह पागल-सी हो जाती है, मौन हो जाती है। इसी हालत में नादिरा को झूठ बताया जाता है कि उसके पति नेउसे तलाक दिया है जबकि पिता ने ही रशीद से जबरदस्ती तलाक दिलाया था और नादिरा की शादी अमीर बूढ़े सलीम के साथ करवाने की कोशिश करता है।

नादिरा इससे इंकार करती है। नादिरा को पारु से यह सच का पता चल जाता है कि उसके पति ने उसे तलाक नहीं दिया है। ऐसी नीचता तो नादिरा के पिता ने ही की है। वह अपने बच्चे और पतिके लिए तरसती है।

महम्मद खान बूढ़ा होता जा रहा था। अब उसे नादिरा की चिंता खायी जा रही थी। वह पश्चाताप करने लगा और नादिरा की उसके पति से दोबारा शादी कराना चाहता है। रशीद को भी पश्चाताप होने लगता है कि पत्नी से पूछे बिना ही उसने तलाक क्यों दे दिया। वह नादिरा से दोबारा शादी के लिए तैयार हो जाता है। इससे नादिरा बहुत खुश हो जाती है। किन्तु पुनः शादी करने के लिए धर्म के नियम आडे आते हैं। नादिरा फिर से आतंकित हो जाती है। जैसा कि कुरान में बताया गया है कि - "जब पति अपनी पत्नी को तीन बार तलाक कह दे तो,उनका संबंध खत्म हो जाता है। दोबारा एक होना है तो उस महिला को दूसरे आदमी से शादी कर फिर उससे तलाक लेना होगा। या फिर एक दिन के लिए ही सही दूसरे आदमी से शादी कर,उसके साथ एक रात गुजारनी पडेगी। दूसरे दिन ही उससे तलाक लेना होगा और तीन महीने तक इंतजार करना होगा ताकि ये जाँच ले कि गर्भ ठहरा है या नहीं। अगर गर्भ नहीं ठहरा है तभी वहदोबाराअपने पति से शादी कर सकती है। ये इस्लाम धर्म शास्त्र है। इसका पालन करना ही होगा।"[ii](सारा अबूबकर, चंद्रगिरी तिरदल्ली, पृ. सं -66) इस तरह के भेदभाव को उजागर करने वाली इस कहानी में कहानी बताती है कि एक महिला के लिए अपने हक के लिए लड़ना आसान नहीं है। "मुझे संपत्ति में हिस्सा मिलना चाहिए। मेरे पास इसके लिए कोर्ट का आदेश है"[iii] (सारा अवलोकन, लेखिका -चंदमति सोंदा) । सारा के नजर में स्त्री के जन्म को नकारनेवाले समाज के नकारात्मक रवैये से बचा नहीं जा सकता है अगर स्त्री को बहुत अच्छा देखना एक बात है। यह विश्वास करना कठिन है की जिस सामाजिक संदर्भ में अन्य धर्मो को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है, वह उनके धर्म को सुविधाजनक बनाने के मूड में है। महिला साहित्य को एक नया आयाम । सारा अबूबकर के उपन्यासो का उद्देश साहित्यिक सामाजिक सुधार को प्रेरित करना है।

निष्कर्ष:-

नादिरा की यातना समूचे मुस्लिम समाज की महिलाओं की यातना है। धर्म के कठिन नियमों का पालने करने को कहनेवाले पुरुष अपना स्वार्थ, निचता, ओछीकुप्रथाओं को महिलावों पर थोपकर नियमों को फेर-बदलकर महिलाओं को शोषित करते हैं, इसका मार्मिक चित्रण सारा अबूबक्कर ने उपन्यास में चित्रण किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

[i] सारा अबूबकर, चंद्रगिरी तिरदल्ली, पृ. सं -32

[ii]. सारा अबूबकर, चंद्रगिरी तिरदल्ली, पृ. सं -66

[iii] सारा अवलोकन, लेखिका -चंदमति सोंदा

प्रो.श्रीमती राजु एस. बागलकोट
प्रोफ़ेसर, हिन्द विभाग,
कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविध्यालय, विजयपुर